मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2016 marumegh
ISSN:2456-2904

'मृदा स्वास्थ्य कार्ड की उपयोगिता'

नरेश पाराशर और सागर कुमार शर्मा

पीएचडी रिसर्च स्कॉलर, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, जयपुर
सी एस ऐ कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय,कानपूर

मृदा स्वास्थ्य से तात्पर्य है– मृदा में विभिन्न फसलों के लिये आवश्यक पोषक तत्वों का स्तर। अर्थात् जिस प्रकार से मनुष्य के स्वास्थ्य निर्धारण हेतु विभिन्न पोषक तत्वों के मान निर्धारित है उसी प्रकार से मृदा स्वास्थ्य निर्धारण हेतु भी पोषक तत्व स्तर पर विभिन्न मानक हैं जो कि मृदा स्वास्थ्य का निर्धारण करते हैं। "सूबीजम सूक्षेत्रे जायते सम्पद्यतः" अर्थात् अच्छा बीज **स्वस्थ** भूमि में भरपूर पैदावार देता है– वेदों में वर्णित यह कथन मृदा स्वास्थय कार्ड की उपयोगिता को वास्तविकता के पटल पर चरितार्थ करता हुआ दिखाई देता है।

"उन्नत होगा मृदा पोषण मान, उन्नत कृषि, खुशहाल किसान"

"भारतीय कृषि की मजबूरी है, मृदा स्वास्थ्य कार्ड जरूरी है"

मृदा स्वस्थ है अथवा नहीं इसे निर्धारित करने हेतु विभिन्न मानक राष्ट्रीय अथवा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मृदा वैज्ञानिको द्वारा निर्धारित किये गये हैं–जिसके अंतर्गत–

- प्रथम है–मृदा में पोषक तत्वों का स्तर–जिससे पौधों के लिये आवश्यक सभी 17 तत्वों का स्तर जाँचा जाता है।
- द्वितीय है–मृदा का पी.एच. मान–अर्थात् मृदा की अम्लीयता व क्षारीयता की स्थिति–इन दो मुख्य बिन्दुओं के अतिरिक्त अन्य भौतिक व रासायनिक गुण भी इसको निर्धारित करते हैं।

जैसे–

- मृदा की वैद्युत संचालकता।
- मुदा जल धारण क्षमता, मुदा संरन्ध्रता।
- मृदा में कार्बनिक पदार्थो की मात्रा आदि।

भारत सरकार ने अपने प्रथम बजट (जुलाई 2015) में किसानों के हित को ध्यान में रखते हुये इस योजना की उद्घोषणा की।

योजना के मुख्य तथ्य:-

- इस योजना के अंतर्गत आगामी तीन वर्षों में 145 मिलियन किसान भाइयों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड बांटे जायेंगे।
- राजस्थान में इस योजना का शुभारम्भ 19 फरवरी को किया गया।
- मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरण हेतु 100 करोड़ रूपयों का बजट इस योजना के तहत निर्धारित किया गया है।
- इस योजना के अन्तर्गत सम्मिलित किसानों के मृदा का स्वास्थ्य कार्ड तैयार किया जायेगा तथा उस कार्ड के आधार पर फसलानुसार विभिन्न पोषक तत्वों की आवश्यक मात्रा जो कि फसल विशेष के आधार पर होगी, का विवरण भी इस कार्ड में अंकित होगा।
- जो भी किसान भाई अपनी भूमि का मृदा स्वास्थ्य कार्ड बनवाये, तो उसमें अंकित संस्तुतियों को ध्यान में रखते हुये ही फसलानुसार खाद्य व उर्वरकों का प्रयोग करें। जिससे कम लागत में, अधिक उत्पादन प्राप्त होगा तथा साथ ही मृदा उर्वरता भी अपने अनुकूलतम स्तर पर बनी रहेगी।

प्राथमिक उद्देश्य ;-

- मृदा उत्पादकता को बढ़ावा देना।
- मृदा स्वास्थ्य को उच्च स्तर तक ले जाना।
- फसल के अनुसार विभिन्न खाद्य व उर्वरकों के प्रयोग को बढ़ावा देना।

- मृदा उर्वरता के उचित स्तर को बनाये रखना।
- मृदा में उचित मात्रा में खाद्य व उर्वरक प्रयोग कर अधिकतम उत्पादन प्राप्त करना तथा साथ ही आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाना।

मृदा जाँच-

भारत सरकार द्वारा उद्घोषित मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना को प्रत्येक किसान तक पहुँचने में अभी काफी समय लगेगा। अतः उससे पूर्व किसान भाई अपने स्तर पर मृदा की जाँच करवा सकते हैं। उसके लिये सर्वप्रथम जो कार्य करना होगा वह है– मृदा नमुना लेना।इसके लिये भाईयों–आप जिस खेत की मृदा की जाँच कराना चाहते हैं उसमें से यादृच्छिक रूप से 8–9 स्थानों को चुने। उसके पश्चात् 15 सेमी गहराई (6 इंच) का श्टश आकार का गड्डा खोदें। यानि जिस गहराई तक सामान्य रूप से पौधों की जड़े जाती है उस गहराई तक की मिट्टी को जाँच हेतु प्रयोग में लाना है। 8–9 स्थानों नमूना लेने के पश्चात् उसे मिश्रित करें। उसमें से कंकड़ पत्थर या अन्य मिश्रित पदार्थों को निकाल दें। तथा उसे एक समतल जगह पर रखकर चार बराबर भागों में विभाजित करें। उसके पश्चात् आमने–सामने के दो भागों को रखे तथा बचे हुये दो भागों को निकाल दें। इस प्रक्रिया को तब तक दोहराये जब तक अंत में आधा किलो मृदा शेष न रहे जाये। यही आधा किलो मात्रा प्रतिनिधि नमूना कहलाता है।अब मृदा की जाँच हेतु इसे नजदीकी मृदा परीक्षण प्रयोग शाला, कृषि अनुसंधान केन्द्र अथवा कृषि विज्ञान केन्द्र पर ले जाकर जमा करा दें। इसके जो भी परिणाम आयें उनको ध्यान में रखते हुये, मृदा–वैज्ञानिकों की सलाह से अपनी भूमि में फसलानुसार खाद्य व उर्वरकों का प्रयोग करें।

मृदा स्वास्थ्य कार्ड की आवश्यकता,उपयोगिता एवं भविष्य में लाभ की सम्भावनाये:-

वर्तमान समय में कृषि में जो समस्यायें आ रही है उनसे किसान भाई भली भाँति अवगत हैं। कभी असमय वर्षा, कभी ओलावृष्टि कभी सुखा प्राकृतिक स्तर पर समस्यायें उत्पन्न करते हैं तो अपने स्वयं के स्तर पर अधिक लाभ कमाने की लालसा के कारण भी हमने कई नयी समस्यायें को कृषि में जन्म दे दिया है। उसमें भी जो प्रमुख समस्या है वह मृदा उर्वरता का स्तर–जिसको हमने रासायनिक उर्वरकों के अधिक प्रयोग से निम्न स्तर पर ला खड़ा किया है जिससे मृदा उत्पादकता को तो घटाया ही है साथ में कैंसर जैसी लाइलाज बीमारियों को भी जन्म दिया है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरण योजना, इसी समस्या के समाधान हेतु भारत सरकार का एक अतिप्रशंशनीय प्रयत्न है। जिसके माध्यम से वर्तमान में भारतीय कृषि को व्यवसायीकरण के स्तर तक लाया जा सकता है।

उपयोगिता –

"कृषि उत्पादन बढ़ाना है, मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना को अपनाना है"

- ✓ मृदा के उर्वरता स्तर के विषय में जानकारी होगी।
- ✓ फसलानुसार उचित मात्रा में उर्वरक प्रयोग होगा।
- ✓ मृदा उर्वरता बनी रहेगी।
- ✓ उत्पादकता बढ़ेगी, लागत घटेगी।
- ✓ रासायनिक उर्वरकों के अधिकतम प्रयोग से मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों में कमी आयेगी।

भविष्य में लाभ–

मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरण कर उसकी संस्तुतियों को ध्यान में रखते हुये–उर्वरक प्रयोग किये गये–अर्थात् सम्पूर्ण योजना यदि वास्तविकता के धरातल पर पूर्ण रूप से क्रियान्वित की गयी तो इसके भविष्य में निश्चित रूप से सुखद व उत्साहपूर्ण परिणाम आयेंगे। इससे मृदा स्वास्थ्य तो सुधरेगा ही साथ ही, उत्पादता बढ़ने से किसानों की आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ होगी। भविष्य में वैश्विक कृषि बाजार में भारत अपने आप को एक नये आयाम पर स्थापित करेगा। अतः यह योजना भारतीय कृषि को एक नयी दिशा देगी।